

आर्य समाज
ARCHIVES

3025

८१ पंचायनानि त्यपूजा
गोपाली पिण्ड मन्त्र
वशिष्ट शा पमो चर्न

आर्य समाज ARYA ARCHIVES	3025	
------------------------------------	-------------	--

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ पंचायनमित्य
यूजाविधिरिति ख्यातं ॥ ॐ श्रुयादि ॥ अस्म
न ॥ ॐ कुरुत कामनाथं भगवादिपं
चायनयूजां कुरु श्रीसूर्यायाद्यं नम
॥ ॐ पूष्यं नमः ॥ ॐ शुकं ॥ ॐ नमः
स्त्वाना ॥ नारा ॥ अथ पाण्डूजा ॥ शत

सिंचनं ॥ पूष्यं नमः ॥ ॐ भगवाय नमः ॥
ॐ श्रद्धावागं कथय नमः ॥ अनकासनाय
२ ॥ कदाय २ ॥ शुकनाय २ ॥ नासाय २ ॥ य
दाय २ ॥ यगाय २ ॥ कगनाय २ ॥ कर्षिका
य २ ॥ ॐ कृष्णसनाय नमः ॥ ॥ क्षमनं ॥ ॐ यं
वाह्यं ॥ ॐ ददं वः ॥ शांतालं कगद्वयं ॥

शास्त्रातिनयनीधानं वृषा वृद्धमहं रुज
॥ क्षमनयुष्यनमः ॥ चन्द्रन ॥ यक्षायवीन ॥
यूष्य ॥ नयैद्य ॥ वद ॥ उं नमः ॥ गं रुवाय ॥
प्रियांजलिमूलमकुं ॥ जाय ॥ २१ ॥ ॥
उं विष्णुर्वै ॥ न्यास ॥ आक्षमनादिगुत्र
जासनायनमः ॥ क्षमन ॥ उं क्षमनमदं

वृद्धादिं गं वचक्रगदाधनं मगिल्लं
लाकं गं गादासिनमहं रुज ॥ क्षमनयुष्य
२॥ वदनादि ॥ वद ॥ उं वद विष्णु ॥ प्रियां
जलिमूलमकुं ॥ जाय २१ ॥ ॥ सुखा
यनमः ॥ न्यास ॥ उं आक्षमनादिगुत्र
उं सफं श्रक्षमनाय २ ॥ क्षमन ॥ उं वक्रव

ॐ द्वि वा द्रं च द्वि म विं य द्र ध्व वि लं स प
स फि त थ वृ ह य द्वा स न म हं रु ऊ ॥ ध्व
न पृ ष्ठां २ ॥ च न्द ना दि ॥ व द ॥ उं श्रा कृ ष्ण
॥ श्रि यां ऊ ति ॥ जा य २ ॥ ॥ उं गं ज य
न य ३ ॥ न्या स ॥ उं श्रा ध्वा ना गं क य र्था
दि ॥ उं मू षा स न य न म ४ ॥ ध्व न ॥ उं रु

३६
स च त्रुं गं ग व र्णं उ क व कं शि ला व नं
सर्व सिद्धि य दा ना र्ग मू षा वृ ह म हं रु ऊ
॥ ध्व न पृ ष्ठां २ ॥ च न्द ना दि ॥ व द ॥ श्रि यां
ऊ ति ॥ जा य २ ॥ ॥ उं गं ज य न म ४ ॥
न्या स ॥ श्रा ध्वा ना गं क य र्था दि ॥ उं सि द्धा
स ना य न म ४ ॥ ध्व न ॥ उं रु त्रि नां गी मि र्वा

इन्द्राय नमः ॥ इति सावनानां हि मादि
न नयां व ७१० सिंहावृद्धासि ह ७३॥ ७४॥
नयूषा २॥ चन्दनादि ॥ वद ॥ ३॥ अम्र
न्त्रिके ॥ प्रियां कृति ॥ जाय २॥ ३॥ ३॥
वादिपं वायनाय ०० दधूयं नमः ॥ ३॥
वदीयं नमः ॥ ०० देरुलेयूषा नाम्

सत्यादि ॥ धनगतवृद्धयत्नय ॥ ३॥ नमः
सुवृद्ध १०१ ॥ ३॥ नमः सुवृद्ध १०१ ॥ ३॥ प्रष
न वृद्धराग ॥ ३॥ अवनवृद्धमदी ॥ ३॥ नमः
सुदहनसं ॥ विषय नमः सुवृद्ध विषय ॥ अ
न्यासु सुस्मरुपकुदगय १०१ वकी ॥ अ
सत्य ०० मिवा रुव ॥ ३॥ नमः सुवृद्ध विषय

नमोस्तु नमः० त्र वानमस्तु रगवनम्
यगस्तु सप्तमी हस्त ॥ॐ नमो विदाथय ००
मायजानो न्यद व्याक म क न बहवानी
दानव्यावृणुत त्यावापु कूपउ कृसा
सुध्वनि ॥ॐ विष्णु कर्माय जनि सुद
वैश्रादि गन्धर्व श्रुतवद्धिगी यः १८ गीय

पिगाजनि गोषधीना मयांग हृद्वादधा
त्युत्तरी ॥ॐ मीरुस्तुम ॥ॐ विक्त्रुद
विनाहि ॥ॐ सहस्राणि सहस्र ॥ॐ
श्रुसंख्याना ॥ १० ॥ॐ वय ॐ साम ॥१॥
थानि गतत्रुदयनयः ॥ मुखवाद्य ॥ दध
प्रणम ॥ नृत्त्यगीतवाद्य ॥ ॥ सुगो

गिवं गिवन वं भनं गिवात्मानं गि
वात्मानं गिवमा गिवन वं भनं
मिसदा गिवं विष्णु विष्णु वनं भनं
न कि नाथं न गत्यु न नमा मिसगादि
व द दिष्ट मनसा यितं ॥ नमस्तु व
नाधीनं न व नि न न द दिष्ट ॥ दिनना

धं गित्तकं न न क मां सर्व सर्वदा ॥ द
की मूरु नमस्तु न नमस्तु विष्णु न क
॥ सर्व का र्यं क क क ल त्वा दि मां
न न गतं ॥ नमा मि नि वि द द वीं द
न न विष्णु व न व नी ॥ दि मा ल य सु ग
भ न क ॥ ग दि मां न ग दी न व ॥ म क

श्री गणेशाय नमः

ADMA ARCHIVE

3025

मि ग सु इ वि मि वि सु वि मि
सु वि इ मि इ मि ग
इ वि ग मि सु ग इ ग इ सु

हीनं क्रिया हीनं रुकि हीनं न (थेवव ।
रूपद वाच्यना हीनं रुम्यगां यं वदव
गा ॥ मृगग भदि ॥ न्यासा न वि सङ्गन
॥ ह्यसा कि ॥ ०० कियं वायन नियय
जा विधिः समाक ॥ ॥ सं ४५६ का कहे

रुनम ४ ग्रा ग पा ला य ॥ न्यासं ॥ क्री कृष्णाय हृदय २ ॥ क्री
गवि न्दाय निवस २ ॥ श्री ग पा क न नि स्वा ये २ ॥ वल्लराय
कवचाय २ ॥ श्री नराय ॥ श्री सुय स्वा हा ॥ एव हृदयादि ॥
ध्यानं ॥ कलाय कृष्ण म ग्धा म् ॥ पूर्ण चन्द्र निरा ननी वहि वद
कृता लुं गी वन मालिन म ग्धा म् ॥ कि राट हा व क यु न वत क धुल
मलित ॥ श्री वल्लराय स यु क ॥ श्री सुहा हा मिका न स ॥ युवती वि
ग रा वल्लराय म ग्धा यत नू रु नि ॥ सर्व वद म यं व र्ण ॥ वा दे य न

चरुर्ज ॥ स्फुटिकी मरुमाली च विद्यामूर्ध्वकचदय ॥ दधनं
पुष्पवाकान् दिव्यमनघनायन ॥ मूलान्तल्यसोर्ध्वमा
रुचर्नजगुरुय ॥ तयनीयत्रसत्कन्या वीर्यकमलरुचया
निशान्कमालचरणी वामया ॥ र्ध्वक्यालिया ॥ हंससिंहासन
त्रमा सर्वत्रताय ॥ मजिर्न ॥ त्रुक्मियादिमहोष्ठीरि ॥ निषेवि
तमुनात्रत ॥ वेदमधुलेसंकार्ण ॥ त्वत्कृणाय ॥ मजिर्न ॥ नात्र
दायम्भूनिबोले ॥ रुक्मनाथिर्निबूयासिर्न ॥ रुन्दादिदेवतावन्द

प्रमर्तयत्रम ॥ र्व ॥ त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं कृष्णाय ॥ मविन्दाय ॥ मपीरु
नवल्लतायत्वा ॥ र्गमप्रवाहनाममरुस्यनावदमूनि ॥ मय
गोदवताचक्र ॥ कृष्णादेवतासकलविश्राधमार्थकानमाका ॥ थ
जयविनियोग ॥ वन्दावनगर्तकृष्ण वनसिंहासनस्त्रि
र्ग ॥ कदम्बमूलद ॥ म ॥ मपिका ॥ जनव ॥ त्रिर्न ॥ नात्र
दायीम्भूनिग ॥ ले ॥ दिव्यमनत्रसा ॥ त्रुक्मिया ॥ सहितं पत्रया
हस्तावनमालिनमीय ॥ र्व ॥ त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं कृष्णाय ॥ मविन्दाय ॥ मपीरु

नं श्वचकलसकनं नदवक्त्रमयं वं नं अ५४पा
निदयनिर्ता ॥ (लो) ॥ (म) पाली पिण्डमनुस्यवक्त्रा
अ५४ मयणी चन्द्रादृष्टादवताधर्मार्थिका
ममाकार्थसकलविद्याप्राप्त्यर्थं य विनियोगः ॥

पूस्तकाद्यहस्तांशुः स्तानमूदाधर्मा तथा स्तारिक
ताके मूला स चैतनवर्तुमिता ॥ अ५४ मयणी चन्द्रादृष्टादवताधर्मार्थिका
ममाकार्थसकलविद्याप्राप्त्यर्थं य विनियोगः ॥

ॐ शुभं श्री यगि कृष्ण यमावन महा मनुस्य र गवा
त वगि कृष्ण विष्णु शुभं गायत्री दवताः अनूष्टुप कंद
सूर्य गायत्री दवताः अंबीजः ॐ ग किं मंकी तर्क म
म गायत्री सिद्धिः अथ जय विनिष्ठा ग ॥ अं अं अं अं
नमः ॥ ॐ तर्क नीत्या स्यादा ॥ मं मं मं मं मं मं मं मं
अनामिका स्यादा ॥ ॐ क निष्ठा स्यादा ॥ कं कं कं कं
ल य स्यादा ॥ ॐ वेद दयादि ॥ अथ ध्यान ॥ यज

ब्रह्म मयी दवी गाय दद कनी शुभं सिद्धि वस्तु ममे
वेत गायत्री मनुयास्तु ॥ ब्रह्म ग विष्णु जननी यन
क्रांति मयी यन ॥ माद स्य क रुत दवी या गिनी दद
यस्तु वे ॥ अहम महा वद नृपी विमल्य सुवस्वती ॥ अं
न अम न दवी ब्रह्म याति नमोस्तु ॥ ॐ शुभं श्री वि
ष्णु मि गाय यमावन मनुस्यः विष्णु मि गाय विष्णु मि
गु कंदः विष्णु मि गाय दवताः गायत्री विष्णु मि

[illegible]

विदुः॥ गां यः धनिधीनाः समनसा वचमग्रतः॥ र
गवती गायत्री वक्त्राय त्वै विमूकः कुरु वति पति
त्वाथा निमूढा पुदः ध गायत्री कुरु यतः॥ अष्टाक्षरं
नैव वै॥ ॥ ॐ अस्य गायत्री वेग न्यमे नुस्य वामद
अष्टाक्षरं वाद वेगः अष्टाक्षरं कुरुः वेग न्यमे नुज
य विनिधा गः॥ ॐ अं गुह्यं स्यान्निमः॥ ॐ न कुरु नीत्यं
स्वादा॥ ॐ नैव मध्यमा स्यावषः॥ ॐ वं अनामिका स्याद्दुः॥

ॐ लं क निष्ठायां वोषट् ॥ ॐ वं क न त न वृष्ठायां रुद्र ॥
प्रव ह द या दि ॥ ॐ ओं पा दा र्था न म ॥ ॐ आं मूर्ध्नि न म ॥
॥ अथ ध्यानं ॥ ॐ का न्म क ग गं क का टि सु दृ गी मा मी
न गृ ग सु नीः चन्द्रा र्क्षा कि ग म सु कां म धू म दे वा सा
त न गृ ग यां वि श्र ग्म नि गं व नं ऊ य वे दिं धू ल क
या तं क नः नो धा यो व न ग वि गं सि पि त नू दे न न्य

वृ यां ग य ॥ अथ मनु ॥ ॐ क्कं क्की क्कं ग य गी र्वा हा ॥
ग य ग्रा वे न न्य वे न न्य ॥ प्र वं च तु र्दि ग ति वा नं ऊ य न्य